Dr. Kumari Kiran
Department of Home Science
M. Mahila College, Ara.

B.A. Part III, VIII Paper
Family Relationship
(पारिवारिक सम्बन्ध)

Topic :- Family is the basic Social institution.
"परिवार समाज की प्रारंभिक एवं मौलिक इकाई है"

परिवार समस्त सामाजिक संस्थाओं में सबसे मान्य और सार्वभौमिक इकाई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अपने जन्म से मृत्यु तक समाज के मध्य रहता है। व्यक्ति का समाज के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। हमारा मानवीय समाज हमारे जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की नियमित पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार के समूहों में संगठित है। बालक का प्रथम सामाजिक समूह परिवार होता है जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसे सब सुरक्षा परिवार के द्वारा प्राप्त होती है, अर्थात परिवार समाज की एक ऐसी इकाई है जो समाज की विभिन्न जिम्मेदारियों को पूरा करती है। समाज के विभिन्न सदस्य विभिन्न परिवार से आते हैं। यदि परिवार न हो तो समाज में आने वाले सदस्यों की संख्या धीरे-धीरे समाप्त होती जायेगी और परिवार का अस्तित्व न होने पर समाज का भी अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार समाज की ऐसी महत्वपूर्ण प्रथम इकाई है जिसके ऊपर समाज की दृढ़ता एवं स्थायित्व निर्भर करती है।

परिवार समाज की प्रारंभिक एवं मौलिक इकाई है। इस संबंध में मानव शास्त्रियों का यह विचार है कि संसार में सर्वप्रथम परिवार की उत्पत्ति हुई और इसी से स्वाभाविक जत्थों एवं स्वाभाविक झुण्डों की उत्पत्ति हुई तथा इनसे ही विभिन्न जातियाँ उत्पन्न हुई और फिर इनके विस्तार से राष्ट्र एवं राज्यों का निर्माण हुआ। इस तरह कहा जा सकता है कि मानव समाज का इतिहास परिवार पर आधारित है और इसी से इसकी शुरुआत होती है। मेकर महोदय के अनुसार — "केवल व्यक्तियों के समूह को ही समाज नहीं कहते हैं, यह व्यक्ति तथा समूह के बीच विद्यमान संबंधों की व्यवस्था है।" समूह में रहते हुए यदि व्यक्ति में समुदाय के प्रति दया, ममता, स्नेह का भाव नहीं है तो उसे समाज का अंग नहीं माना जा सकता।

Scanned with CamScanner

बर्गेस और लॉक ने परिवार को समाज की सार्वभौमिक इकाई बताते हुए लिखा है — "एक परिवार विवाह, रक्त एवं गोद लेने के संबंधों से जकड़े हुए व्यक्तियों का एक समूह है जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं।"

बोसनाक और बोसनाक के अनुसार — "परिवार वह आधारभूत सार्वभौमिक संस्था है जिस पर प्रत्येक समाज का अस्तित्व निर्भर करता है।"

मैकाइवर के अनुसार — "सामाजिक रीतियों, कार्यवाहियों, अधिकार व पारंपरिक सहायता, अनेक समूहों तथा उनके उप-विभाग, मानव-व्यवहार के नियमों और मान्यताओं की व्यवस्था है।"

आगबर्न एवं निमकॉफ के अनुसार — "परिवार पति-पत्नी का एक स्थायी संघ है जिनमें बच्चे हों अथवा एक स्त्री या पुरुष का अकेले ही अपने बच्चों के साथ वाला संघ है।"

परिवार समाज का संक्षिप्त रूप है और समाज परिवार का विस्तृत स्वरूप है। समाज की समस्त प्रक्रियाएँ छोटे रूप में परिवार में अपना कार्य करती है। बच्चों का जन्म परिवार में होता है और उनका लालन-पालन परिवार में ही होता है। उन पर पारिवारिक परम्पराओं एवं नियंत्रणों का अमिट छाप पड़ती है, जो उन्हें एक अच्छा सामाजिक प्राणी बनाने में सहायक होता है। परिवार में ही उनका चरित्र निर्माण होता है, उन्हें वहीं शिक्षा मिलती है जिससे वह समाज में अपना जीवन निर्वाह करता है। परिवार एक इकाई या समूह है जिसमें माता-पिता एवं बच्चों के व्यक्तित्वों की अंतःक्रियाएं होती हैं। इसी इकाई में वह समाज के पारंपरिक, पारस्परिक संबंधों का ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परिवार समाज की प्रारंभिक एवं मौलिक इकाई है।

बच्चे का जन्म किसी न किसी परिवार में ही होता है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहनों के संपर्क में अनेक बातें सीखता है। समाज में किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, हमारा क्या कर्तव्य है और हमारी क्या नैतिक शिक्षाएँ हैं इन सभी का ज्ञान परिवार से ही प्राप्त होता है। परिवार में बच्चों को समाज की संस्कृति के द्वारा विकसित होने का सबसे अच्छा अवसर मिलता है। परिवार के सदस्यों के संबंध समाज की संस्कृति द्वारा निश्चित होते हैं एवं संस्कृति माता-पिता एवं बच्चों के कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को निश्चित करती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

इस प्रकार परिवार नियंत्रण का एक मुख्य अंग माना गया है। और समाज के अनेक कार्यों संपादित करता है। जो बातें बच्चे परिवार में सीख लेते हैं उसका प्रभाव मस्तिष्क पर इतना गहरा पड़ता है कि समाज में भी वह उसी प्रकार का कार्य करता है। परिवार एक पाठशाला है जहाँ पर बच्चे को सब प्रकार की सामाजिक शिक्षाएं मिलती हैं। जैसी शिक्षा मिलती है वह वैसा ही सामाजिक प्राणी बनता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि जो बच्चे बचपन में माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करते हुए वे बड़े होकर समाज के नियम कानून का पालन करते हैं और ठीक इसके विपरीत जो बच्चे घर के अनुशासन भंग करते हुए वे बालक समाज के नियमों को भी भंग करने की कोशिश करते हैं। मानव परिवार में अनेक कार्यों को करता है, सीखता है, उसे सामाजिक कार्यों को करने में सहायता प्रदान करता है। आदिम समाजों में सम्पूर्ण सामाजिक संगठन पारिवारिक इकाईयों पर ही आश्रित होता है। परिवार के अभाव मनुष्य समाज का कोई हित नहीं कर सकता है। जो शिक्षा परिवार में मिलती है वही कहीं भी नहीं मिल सकती। महान - विचारक का बीजारोपण परिवार में ही होता है परिवार ही मनुष्य को एक योग्य या अयोग्य सामाजिक प्राणी बनाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि परिवार समाज की प्रारंभिक एवं मौलिक इकाई है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner